राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सैक्टर-62

नोएडा - 201309 (उ.प्र.)

और

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

के संयुक्त तत्वावधान में

अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

'सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और हिंदी'

प्रतिवेदन

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में 23 एवं 24 फरवरी, 2021 को अंतर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका विषय था - 'सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और हिंदी।' इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारत एवं विश्व में हिंदी के क्षेत्र में सूचना एवं तकनीक के विविध प्रयोगों पर विमर्श करना और भावी संभावनाओं की तलाश करना था।

इस कार्यक्रम में देश-विदेश के हजारों लोगों ने हिस्सा लिया जिनमें एनआईओएस के अधिकारी एवं कर्मचारी, 22 क्षेत्रीय केंद्र के पदाधिकारी तथा अध्ययन केंद्र के शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी ऑन-लाइन जुड़े। साथ ही, आठ देशों के विद्वान एवं हिंदी प्रेमी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। यह कार्यक्रम भारत और मॉरीशस के सोशल मीडिया पोर्टल द्वारा प्रसारित हुआ और लगभग 50 देशों के लोग वर्चुअल माध्यम से जुड़े। एनआईओएस मुख्यालय में प्रत्यक्ष रूप से भी अनेक विद्वान शामिल हुए। इसमें मुख्य चर्चा विंदु थे -

1. भारत में हिंदी की वर्तमान स्थिति और इसकी व्यापकता
2. विदेशों में अनेक रूपों में हिंदी का प्रसार - व्यापकता, चुनौतियां और समाधान
3. नई शिक्षा नीति में भाषा का स्वरूप
4. हिंदी के संवर्धन में सूचना एवं संचार तकनीक के विविध रूप और उनका योगदान
5. भाषा शिक्षण के विभिन्न आयाम
6. हिंदी में तकनीक के प्रयोग में चुनौतियां और समाधान
7. भाषा और तकनीक के परिप्रेक्ष्य में भावी दिशाएं

उद्घाटन सत्र (23 फरवरी, 2021)

एनआईओएस की अध्यक्ष प्रो. सरोज शर्मा ने वेब संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों और देश-विदेश से वर्चुअल माध्यम से उपस्थित सभी विद्वानों, अधिकारियों, शिक्षार्थियों का स्वागत करते हुए इस आयोजन के मुख्य उद्देश्यों को रेखांकित किया। इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार रखते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी की जड़ें सदियों पुरानी हैं और इसे संरक्षित करना और विकसित करना हमारा दायित्व है। चाहे संस्था हो, संस्कृति हो या अन्य विविध आयाम हों, हिंदी ने प्रत्येक मोड़ पर अपनी अहम् भूमिका निभाते हुए मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है। उन्होंने कहा

कि भारत और मॉरीशस - दोनों देश मिलकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा में किस प्रकार आगे बढें, यह विचारणीय विषय है। हिंदी की साझी विरासत को आगे बढ़ाने के लिए हमें इस तरह के अनेक कार्यक्रम और संगोष्ठी का आयोजन निरंतर करना हैं ताकि हिंदी की सशक्त विरासत को हम आगे बढ़ा सकें। मॉरीशस में भी हिंदी की अपनी विशाल परंपरा है। उन्होंने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए कहा कि एनआईओएस अनेक स्तरों पर हिंदी और अन्य भाषाओं के संवर्धन के लिए कार्य कर रहा है, इस कार्य को और व्यापक रूप में प्रसारित करना है ताकि एनआईओएस भाषा के माध्यम से अनेक देशों में भी कदम बढ़ा सके। हाल में 'भारतीय ज्ञान परंपरा' के मुक्त बेसिक स्तर की सामग्री को संस्कृत, हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यमों में शिक्षार्थियों को उपलब्ध कराया गया है। हमारा लक्ष्य भारतीय ज्ञान परंपरा की सामग्री को 08 विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद कराने का है।

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने सभी लोगों का धन्यवाद करते हुए इस बात पर बल दिया कि हिंदी को बढ़ाने के लिए इस तरह के अनेक कार्यक्रम लगातार करने होंगे। उन्होंने 'वसुधैव कुटुम्बकम' और विश्व ग्राम की अवधारणा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि जिस भाषा में चिंतन, अनुसंधान और शोध संभव हो, वही हमारी मातृभाषा हो सकती है। उदार संस्कृति और विरासत वाली हिंदी अपनी क्षमता को

विकसित क्यों न करें? हिंदी वैश्विक साहित्यिक भाषा है। विश्व भाषा में मैत्रीपूर्ण संघर्ष में कई पड़ावों को पार करते हुए यह आगे बढ़ रही है। बहुसंख्यक देश अपनी भाषा में प्रगति कर रहे हैं, तब भारत में हिंदी की वैचारिक भूमि पर गहन चिंतन करने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि संस्कृति को देखते हुए भाषा की अस्मिता को खंडित होने से बचाना है। हिंदी अपनी ताकत को पूरी दुनिया में उपस्थित करा रही है। भारत एशिया के सबसे बड़े देश के रूप में उभरा है और हिंदी को विजय के अंतिम पड़ाव पर ले जाना है, उसे मुखरता प्रदान करनी है। वास्तव में हिंदी की ताकत भारत को ऊँचाई पर ले जाने में सहायक होगी। हिंदी वैश्विक भाषा बनने के लिए पूरी तरह तैयार है। हिंदी की गरिमा किसी भी बाहरी भाषा की मोहताज नहीं है। हिंदी रचना और मनोभाव दोनों आधारों पर श्रेष्ठ है। प्रौद्योगिकी के सहारे हिंदी आगे बढ़ रही है। यह 22 भुजाओं वाली भाषा है। निश्चित रूप से बाहरी दुनिया भारत की तरफ देख रही है इसलिए हम प्रण लें और हिंदी को आगे बढ़ाएं।

इसके पश्चात् शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी ही सरलता, वैज्ञानिकता, व्यापकता, सांस्कृतिक पक्ष और जन स्वीकार्यता का विस्तृत उल्लेख किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं का विकास साथ-साथ किया जाना चाहिए और पिछले कुछ वर्षों में इस दिशा में अनेक कार्य हो रहे हैं। लेकिन भविष्य में भारतीय भाषा अभियान चलाने की जरूरत है। हिंदी में हर क्षेत्र में कार्य किया जाना संभव है। हिंदी हमारी राजभाषा है और देश में 70-80 प्रतिशत लोग हिंदी पढ़ते है और सभ्य व्यवहार करते हैं।

उन्होंने कहा कि हमें हिंदी को राष्ट्रभाषा ही नहीं जनता की भाषा बनाना है। देश में भारतीय भाषा को सभी क्षेत्रों में पुनर्स्थापित कर सकते हैं और हिंदी को वैश्विक भाषा बनाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। जब भारत स्वतंत्र हुआ तब हिंदी को 9वां स्थान था। आज दुनिया में हिंदी को नं. 1, 2, 3 या 4 स्थान प्राप्त है और यह स्वतंत्र भारत में प्रगति हुई है। आज भी संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को ही अपनाया जाता है। इस बार शिक्षा नीति में त्रिभाषी सूत्र के रूप में हिंदी को मान्यता प्रदान की गई है। मॉरीशस जैसे कई देशों में हिंदी में आसानी से बोल सकते हैं। हिंदी विश्व की भाषा बन रही है। हिंदी की लिपि देवनागरी सबसे सुंदर और सर्वश्रेष्ठ लिपि है। हिंदी भाषा में तकनीक में काम करना बिल्कुल सरल है क्योंकि यह जैसे बोली जाती है, वैसी ही लिखी भी जाती है। आज सोशल मीडिया में हिंदी का काफी विस्तार हुआ है। सोशल मीडिया में लोग 70-80% हिंदी में काम कर रहे हैं। अमेजन, गूगल जैसी विदेशी कंपनियों ने हिंदी की शक्ति को पहचाना है और वे हिंदी में काम कर रही हैं। उन्होंने सभी का आह्वान करते हुए कहा कि भारत में सभी राष्ट्रीय स्तर का काम हिंदी में करें और हिंदी को विश्व की भाषा बनाने में योगदान दें। यह सम्मान हिंदी को राष्ट्र की दिशा में आगे बढ़ाने में मदद करेगा। भारत के लोगों में अपनी भाषा का स्वाभिमान जगाना होगा। प्रारंभ में हम अपने हस्ताक्षर अपनी भाषा हिंदी में करें और कार्यालय में कार्य

हिंदी में ही करें। ये छोटी-छोटी बातें जीवन में धारण करने से हमें अपनी भाषा के प्रति स्वाभिमान जगेगा और हम हिंदी के माध्यम से दुनिया को बहुत कुछ दे सकेंगे।

प्रथम सत्र

इस सत्र में चार विद्वानों के व्याख्यान हुए :-

- प्रो. वी.के. मल्होत्रा, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर)
- प्रो. रमेश कुमार पांडेय, माननीय कुलपति, लाल बहादुर शास्त्री, भारतीय संस्कृत विश्वविद्यालय
- प्रो. चंद्र भूषण शर्मा, एनआईओएस के पूर्व अध्यक्ष, इग्नू के शिक्षा विभाग के प्रोफेसर
- प्रो. वृषभ प्रसाद जैन, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा

प्रो. वी.के. मल्होत्रा ने प्रामाणिक आंकड़ों के द्वारा संचार के व्यापक प्रभावों का उल्लेख किया और यह भी स्पष्ट किया कि 50 प्रतिशत से 60 प्रतिशत हिंदी जानने वाले भारत में हैं और 5-6 प्रतिशत विश्व में हिंदी बोलने और लिखने वाले हैं। ऐसी स्थिति में भाषाओं के माध्यम से ही विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ लोगों को मिल सकेगा और सतत विकास संभव हो सकेगा। भविष्य में ऑन-लाइन मोड की प्रमुखता होगी, जैसे - सूचना, संचार, व्यापार, मनोरंजन (लोकप्रियता प्राप्त धारावाहिक, गाने, फिल्में) होटल, फ्लाइट, ट्रेन की टिकट बुक कराना इत्यादि। उन्होंने भारत में सेटेलाइट के उदय एवं विकास और उत्तरोत्तर सूचना क्रांति का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया।

उन्होंने प्रौद्योगिकी के नए-नए रूपों, जैसे - ई-मेल, फेसबुक, ट्विटर, संवादात्मक मीडिया, बैब कास्टिंग, डिजिटल कॉलर, वीडियो ग्रेम्स, 2डी/3डी आदि को महत्वपूर्ण स्वीकार किया और इनके व्यवस्थित उपयोग की बात कही और संचार के लिए भाषा की उपयुक्तता पर बल देते हुए कला, संगीत, दृश्य-श्रव्य सामग्री, संवादात्मक सामाजिक मीडिया, औग्युमेंटेड रियलिटी आदि का उल्लेख किया। उनके विचार से चारों ओर देखकर पता चलता है कि हमारा तकनीक कहां तक पहुँच रहा है। भारत लाभ प्राप्त करने के लिए वित्तीय रूप से, तकनीकी रूप से और भाषाई रूप से जुड़ा है और लोग निश्चित रूप से अनेक योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं। आज तकनीकी के तौर पर ऑन-लाइन कक्षाएँ हो रही हैं। नई शिक्षा नीति में इस बात का पूरा ध्यान दिया गया है कि आने वाले समय में और अधिक अनुसंधानों को बढ़ाया जाए। प्रायोगिक स्तर पर प्रारंभिक क्षेत्र में शिक्षा अपनी भाषा में दी जाती है तो निश्चित रूप से विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उसके दूरगामी असर हो सकते हैं। हिंदी को और अधिक हम गेम, स्पोटर्स के माध्यम से भी आगे बढ़ा सकते हैं।

दूसरे वक्ता प्रो. रमेश कुमार पांडेय ने भारत की हजारों वर्ष पुरानी भाषायी परंपरा का उल्लेख करते हुए उसमें निहित विशेषताओं को उद्घाटित किया और इस बात पर बल दिया कि ज्ञान ही सबसे उत्कृष्ट है, यह शक्ति प्रदान करती है। भारत ज्ञान के बल पर ही विश्वगुरु बना था। आज हिंदी पुन: इस दिशा में अग्रसर है। पौराणिक आख्यानों का उदाहरण देते हुए उन्होंने वाणी का महत्व बताया। सबसे पहले ऊंकार और फिर भाषा पैदा हुई। सारे ज्ञान दर्शन का मूल उत्स वेद है। उन्होंने बताया कि वाणी से अवबोध होता है अन्यथा इसके प्रकाश के अभाव में संपूर्ण विश्व अंधकारमय हो जाए। शब्द ज्योतिस्वरूप है। भाषा

वस्तुतः संस्कृति अथवा ज्ञान का संप्रेषण करती है। प्राचीन काल में भारत विश्व गुरु था और उसी विश्व गुरु को प्रतिष्ठित करने के लिए हिंदी आगे बढ़ रही है। दुनिया बड़ी तेजी से बदल रही है और भारत भी तेजी से बदल रहा है और इसके बदलने में हिंदी हमारी सबसे बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी की मूल पृष्ठभूमि संस्कृत है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, टीवी, मोबाइल में हिंदी भाषा आने के कारण अब संवाद में बहुत ही सुविधा मिल रही है। अनेक समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं, हिंदी में अनेक नए शब्दों का आगमन हुआ है, जैसे - कोरोना, सेनेटाइजर आदि और संचार। इस तरह हमारी तकनीकी ने हिंदी को बहुत ही विकसित बनाया है। इससे लगता है कि शीघ्र ही हिंदी विश्व में प्रतिष्ठित होगी।

तत्पश्चात प्रो. चंद्र भूषण शर्मा ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को बहन के रूप में उल्लेखित करते हुए यह स्पष्ट किया कि हिंदी के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का संवर्द्धन अत्यंत आवश्यक है। भारत की सभी भाषाएं हमारी अपनी हैं। उन्होंने अनेक उदाहरणों से यह स्पष्ट किया कि तकनीक मात्र सूचना की वाहिका नहीं है। हमें विविधता वाले देश में भाषा के संवर्धन के लिए विस्तृत कार्य योजना तैयार करनी चाहिए। उन्होंने संतोष जाहिर करते हुए बताया कि नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षण सहित अनेक महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं, जो भविष्य की दिशा तय करेंगे। एनआईओएस में पिछले पांच वर्षों में भाषा के लिए किये गए कार्यों का उन्होंने उल्लेख किया, जैसे - मातृभाषा दिवस पर देश भर के बच्चों को अपनी भाषा में विचार रखने और दूसरी भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करना, उत्तर-पूर्व की भाषाओं के संवर्धन और संरक्षण के प्रयास, अनेक भाषाओं में अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना, सिंधी भाषा की सामग्री का निर्माण आदि। साथ ही, उन्होंने एक विशेष पहल का उल्लेख किया जिसके अन्तर्गत सांकेतिक भाषा में शब्दकोश निर्माण और माध्यमिक स्तर के विषयों के पाठों पर 200 से अधिक वीडियो निर्माण का अनोखा कार्य पहली बार किया गया तथा सांकेतिक भाषा के लिए स्वयंप्रभा पर एक ज्ञानामृत चैनल शुरू किया गया।

इस सत्र के अंतिम वक्ता प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने संघ की सामासिक संस्कृति का उल्लेख करते हुए इस बात पर बल दिया किया कि तकनीक को विकसित करना होगा और भाषा की भव्य परंपरा को भी साथ लेकर चलना होगा। सूचना क्रांति एक नया संसार गढ़ रही है। संकट यह है कि संचार के साधनों को और बाजार को देखते हुए हिंदी अपने को कैसे समृद्ध करे? आज नागरी के मानकीकरण, वर्तनी आदि की समस्याएं हैं। भारत को जोड़ने वाली भक्तिकाल की धातुओं को पुनर्गठित करने की जरूरत है जो भारत की अखंडता का प्रतीक रही हैं।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में चार विद्वानों के व्याख्यान हुए :-

1. श्री बालेंदु दाधीच, निदेशक - स्थानीयकरण एवं सुगम्यता, मोक्रोसोफ्ट भारत
2. डॉ संध्या सिंह, हिंदी प्राध्यापक एवं तकनीकी विशेषज्ञ, सिंगापुर विश्वविद्यालय
3. प्रो. शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल
4. श्री अशोक कुमार ओझा, भाषा विशेषज्ञ, युवा हिंदी संस्थान, स्टार टाक संस्था, न्यू-जर्सी

श्री बालेंदु दाधीच ने हिंदी में तकनीकी क्रांति पर प्रकाश डाला और बताया कि हिंदी में तकनीकी में किन प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड रहा है और किस प्रकार हम तकनीक द्वारा भाषा को जन-जन के लिए सर्वसुलभ बना सकते हैं। चुनौतियां का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी भाषा में तकनीक अब बहुत है परन्तु जिज्ञासा और सीखने कि प्रवृत्ति का अभाव है तथा सकारात्मकता का अभाव। तकनीक में किये जा रहे प्रयोगों और अनुसंधानों को सत्यापित करने की आवश्यकता है। इसलिए आवश्यक है कि आधुनिकतम तकनीक का ज्यादा प्रयोग करें, विमर्श में प्रौद्योगिकी पर ज्यादा चर्चा हो न कि inputs, typing इत्यादि पर।

उन्होंने विस्तार से यूनीकोड के लाभों का उल्लेख करते हुए बताया कि इसमें टंकित सामग्री कहीं भी खुल जाएगी, इन्टरनेट की सामग्री को आसानी से पढ़ा जा सकता है इत्यादि। इसलिए हमें इसे समाधान के तौर पर समझने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आज हिंदी में बहुत सारे फॉन्ट उपलब्ध हैं, जैसे - मंगल, अपराजिता, निर्मला, कोकिला आदि जिन हम आसानी से कार्य कर सकते हैं।

दूसरी वक्ता डॉ संध्या सिंह ने विस्तार से बताया कि सिंगापुर में कैसे हिंदी भाषा का स्कूली एवं विश्वविद्यालयी स्तर पर अध्यापन किया जा रहा है। किस प्रकार तकनीक का प्रयोग शिक्षण एवं गतिविधियाँ इत्यादि को सफलतापूर्वक संचालित करने में किया जा रहा है। साथ ही, Facebook, toolkits और apps इत्यादि का हिंदी भाषा के प्रेषण में व्यापक रूप में प्रयोग जारी है, साथ ही प्रश्न बनाने की कला भी सिखाई जा रही है। इस समय लगभग 8000-9000 लोग विदेशी भाषा के रूप में हिंदी सीख रहे हैं।

इसके पश्चात् प्रो. शिव कुमार सिंह ने हिंदी का वैश्विक परिचय देते हुए विदेशी भाषा के रूप में हिंदी के पठन-पाठन की चुनौतियाँ का उल्लेख किया। उन्होंने पुर्तगाल में हिंदी शिक्षण की वस्तु स्थिति के बारे में विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की और नए-नए प्रयोगों का विवरण प्रस्तुत किया, जैसे - भाषा क्या है और इसका प्रयोग कैसे करना है, सामग्री क्या, कैसी और क्यों ऐसी हो, लक्ष्य ध्वनि (Phonemes), शब्द का भाग (Morphemes), शब्द (Words), वाक्य (Sentence) और बातचीत की संरचना (Discourse Structures), सीखने की प्रक्रिया, मानकीकरण, शिक्षक को भाषा के साथ-साथ संस्कृति, दर्शन, इतिहास, भूगोल, राजनीति आदि का अच्छा ज्ञान, मूल्यांकन कैसे हो इत्यादि।

इस सत्र के अंतिम वक्ता श्री अशोक कुमार ओझा ने अमेरिका में हिंदी शिक्षण के विविध रूपों का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया और विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारी शिक्षा रोजगार परक हो परंतु उसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, वह ज्यादा महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि हिंदी भाषा को आवश्यक भाषा (Critical Language) में डालने के उपरान्त युवा हिंदी संस्थान और स्टार टॉक संस्था की नींव पड़ी। उन्होंने यह भी बताया गया है कि बच्चा कैसे सीखता है और उसके सीखने की प्रक्रिया क्या है? साथ ही, उन्होंने भारत के विभिन्न राज्यों के विद्यार्थी और अमेरिकी विद्यार्थियों के मध्य ऑनलाइन परिचर्चा का प्रस्ताव रखा।

संयुक्त निदेशक (सी.बी.सी.) श्री एस.के.प्रसाद ने सभी विद्वानों और दर्शकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और यह भी उल्लेख किया कि हिंदी के विकास में इस कार्यक्रम का विशिष्ट महत्त्व रहेगा।

तृतीय सत्र (24 फरवरी, 2021)

इस सत्र में चार विद्वानों के व्याख्यान हुए :

1. प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, (आईसीसीआर हिंदी पीठ) भारत विद्या विभाग, सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गारिया
2. डॉ. वंदना मुकेश शर्मा, हिंदी व तकनीकी विशेषज्ञ, इंग्लैंड
3. श्री रोहित कुमार हैप्पी, संपादक एवं तकनीकी विशेषज्ञ, न्यूज़ीलैंड
4. श्रीमती रेखा राजवंशी, हिंदी शिक्षण एवं लेखन विशेषज्ञ, ऑस्ट्रेलिया

सर्वप्रथम श्री एस. विजय कुमार, निदेशक, विद्यार्थी सहायता सेवाएँ ने सभी विद्वानों और दर्शकों का स्वागत किया और कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभी का धन्यवाद दिया।

पहले वक्ता प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने सूचना क्रांति के विषय में अपने विचार रखते हुए कहा कि इस युग में अध्यापकों को अपने विवेक से सूचना को ज्ञान में परिवर्तन करने और विद्यार्थियों के निर्माण में योगदान देना चाहिए। अब शिक्षा में केवल शिक्षक का योगदान ही नहीं रह गया अपितु शिक्षा के अनेक माध्यमों और तकनीकी का योगदान कक्षागत अधिगम में प्रभावी है। उन्होंने एल्बर्ट आइंस्टीन के एक उद्धरण का उल्लेख किया - “It has become appealing obvious that our technology has exceeds humanity” और यह बताया कि मनुष्य को विवेकशील तरीके से तकनीकी का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने परम्पराओं पर ज़ोर देते हुए न भूलने और तकनीक के साथ समन्वय बिठाने की ज़रूरत के बारे में प्रकाश डाला तथा सूचना व संचार के बहुत से उदाहरण देते हुए शिक्षा के अनेक अवसरों की व्याख्या की।

उन्होंने इसमें ‘स्वयं’ चैनलों की भी चर्चा की एवं इसके साथ ही स्वयं प्लेटफार्म के 4 Quadrants जो कि 1. वीडियो द्वारा व्याख्यान, 2. विशेष रूप से तैयार पठन सामग्री, 3. स्व-मूल्यांकन परीक्षण एवं 4. संदेह को दूर करने के लिए ऑनलाइन चर्चा मंच के बारे में बताया तथा “स्वयं” से सम्बंधित 9 राष्ट्रीय समन्वयक जैसे कि NIOS, AICTE, IGNOU, NCERT आदि की भी चर्चा की। उन्होंने एनआईओएस में प्रयोग की जाने वाली सूचना व संचार माध्यमों की चर्चा की। उन्होंने हिंदी भाषा के व्यापक विस्तार के कारणों, जैसे - तकनीकी बाज़ार, मनोरंजन, पर्यटन आदि के बारे में भी उल्लेख किया एवं कई देशों के उदाहरण दिए जहां हिंदी भाषा का प्रयोग पर्यटन और अन्य संकेतों के लिए किया जा रहा है और इंटरनेट के माध्यम से हिंदी में उपलब्ध कई ब्लॉग एवं वेबसाइट की भी चर्चा की, जैसे https://bharatdiscovery.org/, http://www.hindisamay.com/

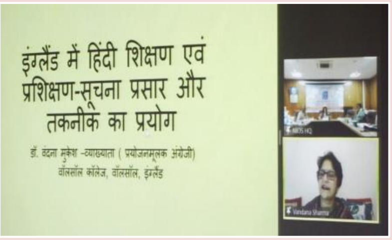

इंग्लैंड से जुड़ी वक्ता डॉ. वंदना मुकेश शर्मा ने 'इंग्लैंड में हिंदी शिक्षण एवं प्रशिक्षण-सूचना प्रसार और तकनीकी के प्रयोग' विषय को विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने इंग्लैंड में हिंदी शिक्षण के इतिहास के बारे में चर्चा की और यह बताया कि इंग्लैंड में हिंदी किस प्रकार सिखाई जाती है और हिंदी भाषा का प्रयोग कैसे किया जाता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इंग्लैंड में हिंदी का शिक्षण अकादमिक स्तर पर (कैंब्रिज अंतर्राष्ट्रीय परीक्षा-द्वितीय भाषा के रूप में एवं विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई विषयों के साथ विकल्प) स्वैच्छिक या व्यक्तिगत स्तर पर (घरों, मंदिरों एवं सामुदायिक केन्द्रों में) एवं स्वायत संस्थाओं (यूके हिंदी समिति एवं कला निकेतन) द्वारा किया जाता है।

उन्होंने हिंदी शिक्षण से सम्बंधित कई समस्याओं, जैसे - उचित मानक पाठ्यक्रम का अभाव, प्रशिक्षण एवं उचित प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, उचित वातावरण का अभाव एवं गुलाम मानसिकता के बारे में भी चर्चा की, जो हिंदी भाषा को सीखने और सिखाने में बाधक बन रही हैं। इसके साथ उन्होंने कई समाधान भी दिए जिन्हें लागू कर रही हैं और निरंतर प्रयत्नशील हैं।

अगले वक्ता श्री रोहित कुमार हैप्पी ने बताया कि न्यूज़ीलैण्ड में औपचारिक रूप से हिंदी नहीं पढाई जाती है। परंतु कई स्वयं- सेवी संस्थाएं न्यूज़ीलैण्ड में हिंदी के पठन-पाठन का कार्य करती हैं। उन्होंने अपनी मासिक पत्रिका 'भारत दर्शन' के माध्यम से न्यूज़ीलैण्ड में हिंदी के विस्तार और प्रसार के विविध रूपों पर प्रकाश डाला। साथ ही, हिंदी भाषा में प्रयोग किये जाने वाले कई प्रकार के टूल्स (उपकरणों) की बात की जो हिंदी भाषा को सीखने में सहायक हैं और पठन-पाठन की प्रक्रिया को सरल बना देते हैं। हिंदी को सुगम, सरल और मनोरंजक तरीके से सीखने के प्रयत्नों का भी उल्लेख किया। इन नवाचारों का उपयोग अन्य देशों के भाषा शिक्षक आसानी से करके अपनी शिक्षण प्रक्रिया को रोचक, सरल और आकर्षक बना सकते हैं।

इस सत्र की अंतिम वक्ता श्रीमती रेखा राजवंशी ने अपने व्याख्यान में यह बताया कि इंग्लैंड और चीन के बाद ऑस्ट्रेलिया में भारतीय तीसरे सबसे बड़े प्रवासी समूह हैं और यह भी बताया है कि वर्ष 2016 की जनगणना के अनुसार ऑस्ट्रेलिया में 159042 हिंदी भाषी हैं एवं हिंदी ऑस्ट्रेलिया में घर पर बोली जाने वाली भारतीय भाषाओं मे शीर्ष भाषाओ के रूप में सामने आई है। उन्होंने यह भी बताया कि ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय पाठ्यक्रम समिति (ACARA-Australian Curriculum & Reporting Aauthority) ने 2012-13 में यह घोषणा की गई कि हिंदी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम स्टेज-3 में विकसित किया जायेगा। उन्होंने यह भी बताया कि 1997 में ऑस्ट्रेलिया में 6 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढाई जाती थी परन्तु आज केवल दो विश्वविद्यालय हिंदी पढ़ा रहे हैं । उन्होंने इस विषय में भी प्रकाश डाला कि प्रौढ़ प्राय: अंतर्राष्ट्रीय विवाह के कारण एवं भारत में व्यापार के कारण हिंदी सीखते हैं। ऑस्ट्रेलिया के भारत के साथ बढ़ते हुए व्यावसायिक संबंध के कारण और भारत में रह रहे परिवार के बुज़ुर्गों या मित्रों से बात करने के लिए भी हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

उन्होंने यह भी बताया कि बच्चों के हिंदी शिक्षण को उनके आस-पास के वातावरण से अवश्य जोड़ना चाहिए। हिंदी शिक्षण में संचार एवं सूचना तकनीकी के प्रयोग के बारे में यह बताया कि ऑस्ट्रेलिया के अधिकतर स्कूलों में पढ़ाने के लिए स्मार्ट बोर्ड का उपयोग किया जाता है जो भाषा शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा कविताओं को सीखने के लिए यू-ट्यूब वीडियो तथा गूगल क्लासरूम, ज़ूम, व्हाट्सएप्प जैसे अन्य तकनीकी साधनों का प्रयोग किया जाता है।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र में चार विद्वानों के व्याख्यान हुए :-

1. प्रो. वृषभ प्रसाद जैन, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
2. श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच, निदेशक-स्थानीयकरण एवं सुगम्यता, माइक्रोसॉफ्ट भारत
3. प्रोफेसर उषा शर्मा, एन.सी.ई.आर.टी.
4. श्री चाँद किरण सलूजा, निदेशक (शैक्षणिक), संस्कृत प्रमोशन फाउंडेशन

प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें सूचना के संचार के लिये हर तरह की प्रौद्योगिकी समाहित है। यह वो प्रौद्योगिकी है जो कि सूचना के संचालन (रचना, भंडारण और उपयोग) की योग्यता रखता है तथा संचार के विभिन्न माध्यमों से सूचना के प्रसारण

की सुविधा प्रदान करता है। वर्तमान समय में भाषा भी सूचना एवं संचार से परे नहीं है और इसका प्रयोग आज के समय में पूरी तरह से किया जा रहा है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि हिन्दी भाषा के व्यापक विकास में सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि हिन्दी के प्रसार तथा इसके संवर्धन में इसकी बहुत बड़ी उपयोगिता है। वर्तमान युग में हिन्दी का संसार सूचना एवं तकनीकी का संसार बन गया है क्योकि इसकी उपलब्धता इन्टरनेट पर कम नहीं है। हिन्दी भाषा में मानवीय संवेदना, रसमयता, सहदयता है इसलिए सूचना एवं प्रोद्योगिकी के माध्यम से इसको बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सांस्कृतिक परिदृश्य में संचार के माध्यम हमें अपनी भाषा के अनुरूप विकसित करने चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि 64 अक्षरी देवनागरी लिपि को महत्वपूर्ण मानकर इसका विकास और हिन्दी भाषा में इसका प्रयोग करना चाहिए

इसके पश्चात् श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच ने हिंदी भाषा के पक्ष में एक अनोपेक्षित, अदृश्य योद्धा के बारे में बताया जो कि तकनीक है और जिसके माध्यम से हम नवाचार की ओर बढ़ रहे है तथा हिंदी भाषा को तकनीकी के माध्यम से आगे बढाया जा सकता है। उन्होंने ब्लॉग लिखने की प्रक्रिया ब्लॉगिंग (Blogging) के बारे में बताया जिसमें तकनीक की मदद से आप अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं। उन्होंने टेक्स्ट इनपुट के 8 तरीकों के बारे में बताया जो कि इनस्क्रिप्ट, इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल, फ़ोनेटिक कीबोर्ड, ऑनस्क्रीन कीबोर्ड, टच की बोर्ड, हस्तलिपि पहचान, डिक्टेशन एवं अनुवाद इत्यादि हैं । इन तकनीकों की मदद से हिंदी भाषा में टंकण करना सुगम एवं रोचकपूर्ण हो सकता है तथा उसका प्रयोग कर हम कुशल हो सकते हैं।

अगली वक्ता प्रोफेसर उषा शर्मा ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि भाषा सभी के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है और भाषा एवं बोली में कोई विशेष अंतर नहीं है। उन्होंने शिक्षा तथा शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में बताया। भाषा के विकास में हिंदी सिनेमा एवं मीडिया की भूमिका के बारे में बहुत ही रुचिपूर्वक तरीके से समझाया तथा उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि बच्चों एवं वयस्कों में पढ़ने की काबिलियत को विकसित किया जाना चाहिए।
उनके विचार में सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी का प्रयोग सही तरीके से किया जाना चाहिए एवं तकनीकी माध्यमों, जैसे- सोशल मीडिया आदि का सावधानीपूर्वक इस्तेमाल किया जाना चाहिए। हमें अपनी भाषा से प्रेम करना चाहिए तथा भाषा का सही ढंग से उच्चारण करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि हिंदी भाषा को विकसित करने के लिए उसका ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करना चाहिए।

इस सत्र के अंतिम वक्ता श्री चाँद किरण सलूजा जी ने नई शिक्षा नीति का संदर्भ देते हुए बताया कि भाषा हमारे सभी के जीवन में बहुत अधिक महत्वपूर्ण है तथा भाषा आत्मनिर्भरता का साधन है। एक बच्चे को केवल सीखना ही जरुरी नहीं परंतु कैसे सीखा जाता है, वह भी समझना जरुरी है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि मातृभाषा को जानना एवं उसे समझना बच्चों का अधिकार है। नई शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 23.3 के सन्दर्भ में उन्होंने बताया कि विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा दोनों क्षेत्रों में शिक्षण, मूल्यांकन, नियोजन, प्रशासन आदि में सुधार हेतु प्रौद्योगिकी के उपयोग और विचारों के मुक्त आदान-प्रदान को एक मंच प्रदान करने के लिए एक स्वायत्त निकाय के रूप में राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी (NETF) मंच का निर्माण किया जायेगा।
उनके मतानुसार प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं को अध्यापक एवं अभिवावकों को संवेदनशील बनकर समझना चाहिए। उन्होंने समझाया कि कैसे संसाधनों का प्रयोग सामग्री के निर्माण में किया जा सके तथा ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थी भी उसका प्रयोग कर सकें। उन्होंने यह भी बताया कि दिव्यांग विद्यार्थियों को समस्यओं को दूर करने के लिए प्रोद्योगिकी का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस कार्यक्रम में मॉरिशस से डॉ कल्पना लालजी, वरिष्ठ कवयित्री एवं कहानीकार के साथ -साथ श्रीमती अंजू घरभरन, सचिव, हिंदी संगठन, कला व सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय मॉरिशस की ने वर्चुअल मोड से जुड़कर अपने विचार रखे तथा मॉरीशस के प्राचीन इतिहास,हिंदी में हस्ताक्षर आंदोलन एवं प्रकाशन से जुड़े तथ्यों से सभी को अवगत कराया । इसके उपरांत सुश्री सुनीता पाहुजा जी, भारतीय दूतावास की प्रतिनिधि के रूप में इस कार्यक्रम से जुडी तथा उन्होंने विश्व पटल पर इस तरह के कार्यक्रम के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए प्रो. सरोज शर्मा, अध्यक्ष, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया तथा मॉरीशस दूतावास की ओर से हिंदी के विकास में हर संभव सहयोग प्रदान करने की बात कही।

<u>समापन सत्र</u>

विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने समापन सत्र में अपने विचार रखते हुए यह जोर देकर कहा कि भारत में अनंत संभावनाएं है। भाषा संस्कृति की संरक्षिका है, भाषायी संस्कार को कायम रखते हुए तकनीक का प्रयोग करना होगा। भाषा में परिवर्तनशीलता समय की मांग है। भाषा के भूमंडलीकरण के लिए अनिवार्य है कि हम नयेपन को स्वीकार करें। निरंतर बदलती तकनीक के दौर में भाषा को अपना अस्तित्व सुरक्षित करना होगा। उनका स्पष्ट मत था कि एक ओर रूढ़िवादिता से भाषा को मुक्त रखा जाए और दूसरी ओर अराजकता से बचकर पूर्ण निष्ठा से भाषा सेवा करें। भाषा के प्रति हीनता बोध से मुक्त होना और पूर्ण आत्मविश्वास से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अनुपालन किया जाना चाहिए। उनके अनुसार स्वभाषा में पूर्ण शिक्षा के प्रावधान और अवसर हैं।

इसके बाद राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की अध्यक्ष, प्रो. सरोज शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम बहुत प्रभावी होते हैं और पूरे विश्व की शैक्षिक गतिविधियों को समझने में सहायक होते हैं। उन्होंने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा की और भविष्य में अनेक कार्यक्रम करने का सुझाव दिया। उनके मत में प्रवासी भारतीयों के लिए हिंदी शिक्षण की समस्या है। इसलिए हिंदी शिक्षक- प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए और प्रयोजनमूलक हिंदी के पाठ्यक्रम का निर्माण बहुत उपयोगी होगा। उनके विचार से समय के परिवर्तन के साथ हिंदी में बदलाव किया जाना चाहिए और तकनीक के सदुपयोग से हिंदी को समृद्ध किया जाना चाहिए और इसके लिए हिंदी भाषियों में दृढ आत्मविश्वास जरूरी है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि शिक्षकों में संवेदनशीलता होनी चाहिए और उन्हें विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करना चाहिए।

अंत में, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश शुक्ल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में हिंदी की गरिमा को उद्घाटित करते हुए कहा कि भारत की 80 प्रतिशत आबादी हिंदी बोलती और समझती है। हिंदी के विभिन्न राज्यों में हिंदी की विभिन्न बोलियां बोली जाती हैं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसलिए यह जरूरी है कि इस भाषा के महत्व को मान्यता मिले और सुदीर्घ परंपरा की धरोहर को सुरक्षित रखा जाए। उनके मतानुसार भाषा वस्तुत: कृत्रिम मेधा द्वारा निर्मित है। कृत्रिम मेधा का उपयोग पर्याप्त नहीं है। भाषा कार्य-कारण के संबंध से परे है। शब्द-अर्थ का संबंध अटूट है जो मशीन निर्मित भाषा में संभव नहीं है।

उन्होंने तकनीक के बढ़ते प्रभावों का उल्लेख करते हुए यह स्पष्ट किया कि अनेक चुनौतिया भी साथ-साथ खड़ी हो रही हैं। बाज़ार की भाषा में तकनीक के अधिकतम प्रयोग देखे जा सकते हैं। Data analytics, मशीनी अनुवाद की बड़ी चुनौती है। संकरता से और शुद्धिकरण से भी बचना चाहिए। तकनीक के अधिक प्रयोग से भाषा की हानि होती है। मनुष्य ज्ञान और भाव ग्रहण के आधार पर निर्मित होता है जो मशीन से संभव नहीं है। Digitalization से प्रकाशन की संभावना कम हो रही है। इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग बढ़ा है परंतु अब हिंदी और अन्य भाषाओं में भारतीय भाषाओं के नहीं, अंग्रेजी के शब्द आएं हैं। भाषाएं समाप्त हो रही हैं, लिपियां भी लुप्त हो रही है। लिपियां कल्पनात्मकता, कल्पनाशक्ति की पहचान है। अत: भाषा के क्षेत्र में तकनीक का उपयोग करते हुए तकनीक के दुष्प्रभावों को रोका जाना चाहिए।

उन्होंने पुन: भाषा की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करते हुए कहा कि भाषा मनुष्य का निर्माण करती है। भाषा रहेगी तो साहित्य रहेगा। सृजनात्मकता जीवित रखना जरूरी है। तकनीक का संतुलित प्रयोग महत्वपूर्ण है और भाषा शिक्षक ही तकनीक में परिमार्जन करें।

कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. बालकृष्ण राय, सहायक निदेशक, शैक्षिक, डॉ. मोनिका काद्यान, शैक्षिक अधिकारी, हिंदी और श्री चंचल कुमार सिंह, प्रशिक्षण अधिकारी (भाषा) द्वारा किया गया एवं इस कार्यक्रम का संयोजन श्री चंचल कुमार सिंह, प्रशिक्षण अधिकारी (भाषा) ने किया। अंत में, संयुक्त निदेशक, क्षमता निर्माण प्रकोष्ठ ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रमुख संस्तुतियां

1. हिंदी के संवर्धन और विकास के लिए राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर निरंतर कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, अनुभवों को साझा किया जाए तथा नवाचारों का उपयोग आपस में करें।
2. विदेशों में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की प्रत्यायित संस्थाएं बनाई जाएं।
3. विदेशों में हिंदी के प्रसार के लिए ज्ञानवर्धक और आकर्षक अध्ययन सामग्री तथा ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम तैयार किए जाएं।
4. हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए प्रयास किए जाएँ।
5. हिंदी और दूसरी भाषाओं का विकास साथ-साथ किया जाए।
6. एक देश के बच्चे दूसरे देशों के बच्चों के साथ संवाद स्थापित करें और अपने अनुभवों को साझा करें।
7. हिंदी शिक्षण की परिधि का विस्तार किया जाए और विभिन्न स्तरों पर नए-नए प्रयोग किये जाएँ।
8. आज सूचना क्रांति ने पूरी जीवन की तस्वीर बदल दी है। इसकी ताकत भाषा की ताकत कैसे बने, इस पर गंभीर विचार किया जाए।
9. संचार प्रौद्यौगिकी की चुनौतियों से बच्चों को परिचित कराया जाए और उनसे निपटने के तरीके भी बताए जाएँ।
10. एनआईओएस अन्य संस्थाओं से मिलकर एक विस्तृत कार्य योजना तैयार करे जिसमें भाषा के सभी पक्षों पर विशद चर्चा हो और महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश तय किए जाएँ।

जनपथ समाचार

सिलीगु

हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार 23 एवं 24 को

नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रोफेसर सरोज शर्मा (अध्यक्ष,एनआईओएस) के नेतृत्व में पहली बार राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान नोयडा एवं विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के सयुंक्त तत्वावधान में 23 एवं 24 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है, जिसका विषय है 'सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा हिंदी'। जिसमें भारत के साथ-साथ विश्व के आठ देशों से विद्वान अपने विचार प्रस्तुत करेंगें। वेबिनार का उद्देश्य भारत में एवं विश्व में सूचना एवं संचार तकनीकी में हिंदी के नए प्रयोगों का अध्ययन करना तथा भविष्य में सूचना एवं संचार तकनीकी में हिंदी की संभावनाएं क्या है-पर चर्चा करना है।

इस कार्यक्रम से सूचना एवं तकनीकी में हिंदी के प्रयोग से सभी प्रतिभागी अवगत होंगे एवं इसका अधिकाधिक उपयोग कर हिंदी में अध्ययन- अध्यापन, शोध कार्य कर पाएंगे। इस कार्यक्रम से विद्यालयी स्तर पर भाषा प्रयोगशाला को एक नयी दिशा मिलेगा और सूचना एवं संचार तकनीकी के माध्यम से भाषा कौशलों को सीखने के नए विकल्प खुलेंगें। निश्चित तौर पर इस कार्यक्रम से विश्व पटल पर हिंदी को मजबूती मिलेगी।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अतुल कोठारी जी, माननीय राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास उपस्थित रहेंगे, जबकि दो दिनों तक चलने वाली इस कार्यक्रम में प्रो. वी.के. मल्होत्रा (सदस्य सचिव,आईसीएसएसआर), प्रो. रमेश कुमार पांडेय (माननीय कुलपति, लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृत विश्वविद्यालय), प्रो. चंद्र भूषण शर्मा (पूर्व अध्यक्ष एनआईओएस एवं प्रोफेसर शिक्षा विभाग, इग्नू), प्रो. वृषभ प्रसाद जैन (महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा), श्री बालेंदु दाधीच, माइक्रो सॉफ्ट (भारत के हेड एवं तकनीकी विषेषज्ञ), डॉ संध्या सिंह (हिन्दी प्राध्यापक तकनीकी विषेषज्ञ, सिंगापुर विश्वविद्यालय), प्रो. शिव कुमार सिंह (लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल), प्रो.आनंद वर्धन शर्मा (आईसीसीआर हिन्दी पीठ भारत विद्या विभाग, सोफिया विश्वविद्यालय,बुल्गारिया), प्रो. रजनीश शुक्ल (माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा), डॉ चाँद किरन सलूजा (निदेशक शैक्षणिक, संस्कृत प्रमोशन फाउंडेशन),प्रो. उषा शर्मा (हिन्दी विभाग, एनसीईआरटी), डॉ वंदना मुकेश शर्मा (हिन्दी तकनीकी विशेषज्ञ, इंग्लैंड),श्री रोहित कुमार हैप्पी (संपादक एवं तकनीकी विषेषज्ञ, न्यूजीलैंड), श्रीमति रेखा राजवंशी (हिन्दी शिक्षण एवं लेखा विशेषज्ञ, आस्ट्रेलिया), एवं श्री अशोक कुमार ओझा (भाषा विशेषज्ञ, युवा हिन्दी संस्थान व स्टार टाक संस्था ,न्यूजर्सी) अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) के देश में स्थित 22 सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारी, कर्मचारी व अध्ययन केंद्र के शिक्षकगण ऑनलाइन मोड के द्वारा उपस्थित होंगे। इसके आलावा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) के फेसबुक पेज (एचटीटीपीएस:// डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट फेसबुक डॉट कॉम/ एनआईओएसएचक्यू) पर इसे प्रसारित किया जायेगा, जिससे लाखों में विद्यार्थी लाभांविन्त होंगे। इसके अलावा विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र के सहयोग से लगभग 50 देशों से लोग भी इस कार्यक्रम से जुड़ेंगे।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की अनूठी पहल

नई दिल्ली, 16 फरवरी (एजेंसी)। वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रोफेसर सरोज शर्मा (अध्यक्ष, एनआईओएस) के नेतृत्व में पहली बार राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा एवं विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में आगामी 23 व 24 फरवरी को 'अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार' का आयोजन किया जा रहा है। इसका विषय है- संचार एवं सूचना तकनीकी एवं हिंदी'। इसमें भारत समेत विश्व के 8 देशों से विद्वान अपने विचार रखेंगे।

वेबिनार का उद्देश्य भारत में एवं विश्व में सूचना एवं संचार तकनीकी में हिंदी के नए प्रयोगों का अध्ययन करना तथा भविष्य में सूचना एवं संचार तकनीकी में हिंदी की संभावनाएं क्या है-पर चर्चा करनी है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अतुल कोठारी, माननीय राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास आमंत्रित हैं। दो दिवसीय इस कार्यक्रम में कई विशिष्ट अतिथि भाग लेंगे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के देश में स्थित सभी 22 क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारी, कर्मचारी व अध्ययन केंद्र के शिक्षक ऑनलाइन मोड के द्वारा उपस्थित होंगे।

हिंदी पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार 23 से

संवाददाता

रांची : एनआईओएस की अध्यक्ष प्रोफेसर सरोज शर्मा के नेतृत्व में पहली बार राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा एवं विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के सयुंक्त तत्वावधान में 23 एवं 24 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है, जिसका विषय संचार एवं सूचना तकनीकी एवं हिंदी है। वेबिनार में भारत के साथ विश्व के 8 देशों के विद्वान अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। वेबिनार का उद्देश्य भारत एवं विश्व में सूचना एवं संचार तकनीकी में हिंदी के नये प्रयोगों का अध्ययन करना तथा भविष्य में सूचना एवं संचार तकनीकी में हिंदी की संभावनाएं क्या हैं इस पर चर्चा करना है।

23-24 को हिंदी के वैश्विक प्रचार पर वेबिनार

कोलकाता. वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार -प्रसार के लिए पहली बार राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआइओएस), नोएडा व विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के संयुक्त तत्वाधान में 23 व 24 फरवरी को 'संचार व सूचना तकनीक एवं हिंदी' विषयक अंतरराष्ट्रीय वेबिनार होगा. एनआइओएस अध्यक्ष प्रो सरोज शर्मा के नेतृत्व में होनेवाले वेबिनार में भारत समेत आठ देशों के विद्वान अपने विचार रखेंगे. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी उपस्थित रहेंगे. कार्यक्रम में आइसीएसएसआर के सदस्य सचिव प्रो वीके मल्होत्रा, लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो रमेश कुमार पांडेय व अन्य मौजूद रहेंगे. इसके अलावा विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो विनोद कुमार मिश्र के सहयोग से कई देशों से हिंदीप्रेमी कार्यक्रम से जुड़ेंगे.

हिंदी के प्रचार-प्रसार को ले वेबिनार 23-24 को

झरिया. वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए प्रोफेसर सरोज शर्मा (अध्यक्ष ,एनआइओएस) के नेतृत्व में पहली बार राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान ,नोएडा एवं विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के संयुक्त तत्वाधान में 23 व 24 फरवरी को 'अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार'का आयोजन किया जा रहा है इसका विषय है, 'संचार-सूचना तकनीकी एवं हिंदी ' जिसमें भारत के साथ साथ विश्व के आठ देशों के विद्वान अपने बिचार प्रस्तुत करेंगे. यह जानकारी आइएसएल झरिया के प्राचार्य हेमंत ठाकुर ने दी. कहा कि वेबिनार का उद्देश्य भारत में और विश्व में सूचना व संचार तकनीकी में हिंदी के नये प्रयोगों का अध्ययन करना तथा भविष्य में सूचना व संचार तकनीकी में हिंदी की संभावनाएं क्या है, इसपर चर्चा करना है. निश्चित तौर पर इस कार्यक्रम से विश्व पटल पर हिंदी को मजबूती मिलेगी.

NIOS webinar from February 23

Mail News Service

Jamshedpur, Feb 18 : The National Institute of Open Schooling, Noida in collaboration with World Hindi Secretariat, Mauritius is organising an International Webinar on 23 and 24 February on Information and Communication Technology and Hindi. Scholars from India as well as eight different countries of the world belonging to the field of Hindi and Information Technology will present their views in the webinar.

The objective of the webinar is to study the new uses of Hindi in the field of information technology in India. The possibility of language in future information and communication technology will also be discussed. The participants will be made aware of the use of technology in Hindi and so that they can make maximum studies, study, research and work in Hindi. At this school level, language laboratories will set a new boundary.

The option to learn language skills through information and information technology will be discussed. (W pb)

सूचना तकनीक व हिंदी विषय पर वेबिनार 23 से

➲ **भारत के साथ विश्व के आठ देश लेंगे भाग**

संवाददाता, बोकारो

वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान, नोएडा व विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के सयुंक्त तत्वावधान में 23 व 24 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन होगा. नेतृत्व प्रोफेसर सरोज शर्मा (अध्यक्ष, एनआइओएस) करेंगी. विषय संचार एवं सूचना तकनीकी तथा हिंदी है. इसमें भारत के साथ-साथ विश्व के 8 देशों से विद्वान अपने विचार प्रस्तुत करेंगे. यह जानकारी शनिवार को सेक्टर-3 स्थित एनआइओएस सेंटर के को-ऑर्डिनेटर हरेंद्रनाथ चौबे ने दी. कार्यक्रम से सूचना एवं तकनीकी में हिंदी के प्रयोग से सभी प्रतिभागी अवगत होंगे. साथ ही इसका अधिकाधिक उपयोग कर हिंदी में अध्ययन- अध्यापन, शोध कार्य कर पाएंगे. इस कार्यक्रम से विद्यालय स्तर पर भाषा प्रयोगशाला को एक नयी दिशा मिलेगी और सूचना एवं संचार तकनीकी के माध्यम से भाषा कौशलों को सीखने के नये विकल्प खुलेंगे.

प्रभात खबर Sun, 21 February 2021
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/58588858

पुर्तगाल में हिंदी || Hindi em Portugal

Shiv Kumar Singh · Admin · 1 m ·

https://www.facebook.com/NIOSHQ/videos/232255025257932/

National Institute of Open Schooling is live now.

1 h ·

विषय : सूचना एवं संचार तकनीकी और हिंदी

Centro de Estudos Indianos || भारतीय अध्ययन केंद्र

Shiv Kumar Singh · Admin · 2 m ·

https://www.facebook.com/NIOSHQ/videos/232255025257932/

National Institute of Open Schooling is live now.

1 h ·

विषय : सूचना एवं संचार तकनीकी और हिंदी

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा इस वेब संगोष्ठी को फेसबुक पर लाइव किया गया था , जिसे हजारों की संख्या में लोगों ने देखा। भारत के आलावा, विश्व के कई देशों से दर्शक इस कार्यक्रम से जुड़ें।

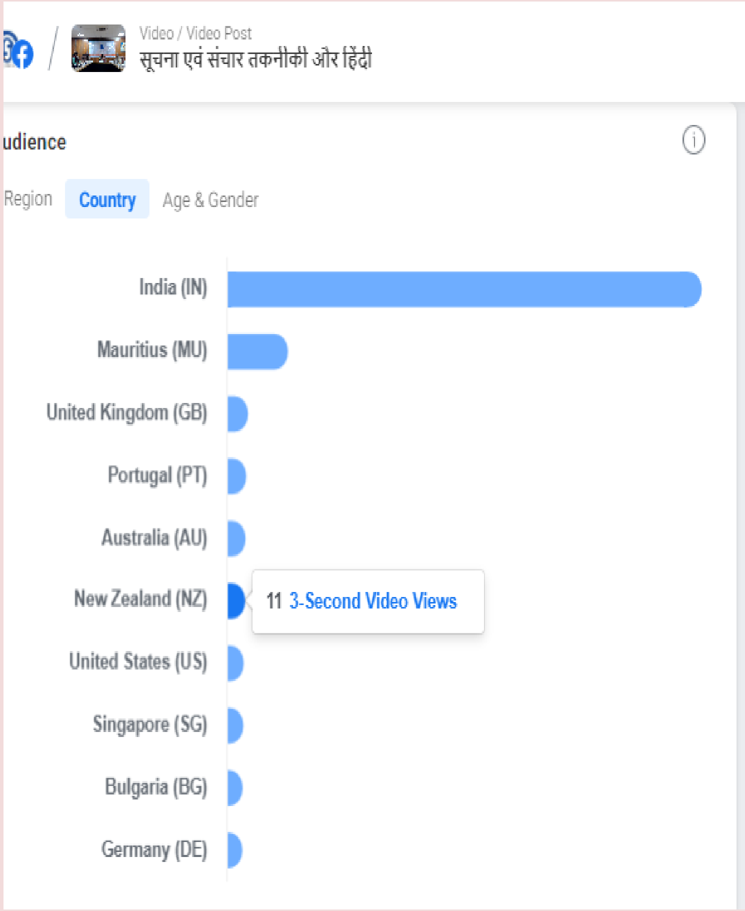

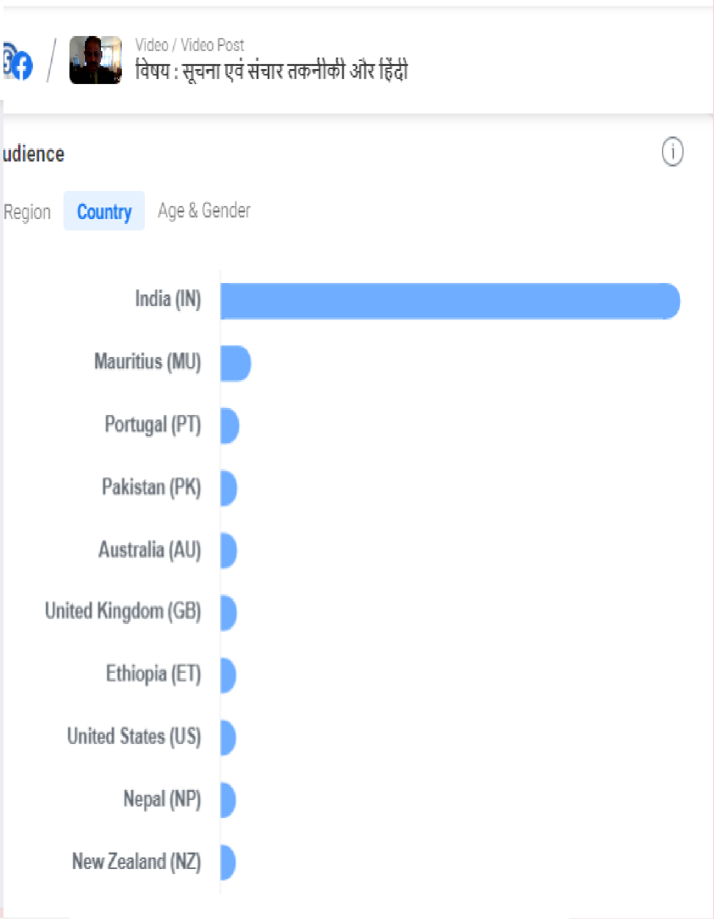

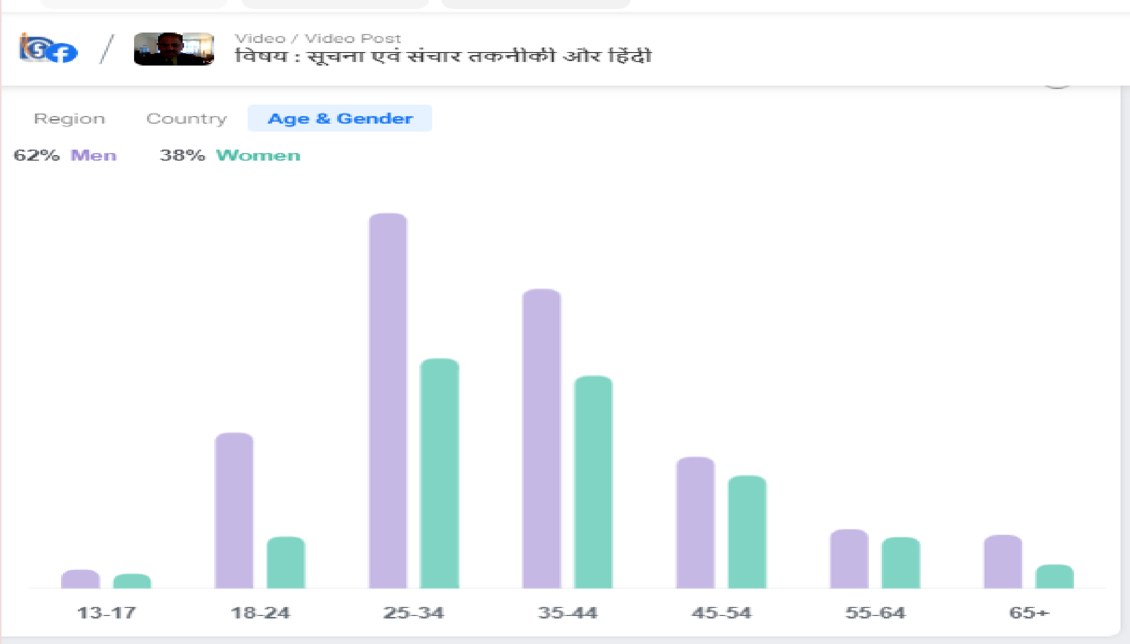

इस कार्यक्रम के रिकॉर्डिंग को एनआईओएस के यूट्यूब चैनल पर अपलोड किया है , जिसे निम्न लिंक के माध्यम से देखा जा सकता हैं :-

https://youtu.be/u4AWYfvYeiM?list=PLcmCiVjGnp8JOlbkdPzI7L9OAXpUwDgDD

https://youtu.be/d-h4Ctbmoec?list=PLcmCiVjGnp8JOlbkdPzI7L9OAXpUwDgDD